International Journal of Professional Development
Vol.9,No.2,July-Dec. 2020 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor 2.823 (IFSIJ)

भारत की आजादी में पूर्वोत्तर भारत के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

ओजेश कुमार
E-mail: Ojesh Kumar2055@gmail.com
Ph. No. 8930648548

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर बहुत से स्वतन्त्रता सेनानी हुए हैं। हर हिन्दुस्तानी ने भारत को आजाद करने के लिए किसी न किसी तरह से योगदान दिया है। एक तरह से कहें तो स्वतन्त्रता सेनानियों की वजह से ही हम आज गुलामी की जंजीरों से आजाद हैं। कुछ स्वतन्त्रता सेनानियों ने सत्य और अहिंसा का मार्ग चुना तो कुछ न अपने शब्दों से लोगों में क्रान्ति उजागर की। कुछ लोगों ने हिंसार के पथ को चुना और विदेशी शासकों को देश से बाहर निकाला। स्वतन्त्रता सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपने तन, मन और धन का बलिदान कर दिया। इतिहास गवाह है कि हमने अपनी स्वाधीनता के लिए कितना संघर्ष किया है और कितना बलिदान दिया है। आजादी जो मिली वो सम्पूर्ण भारत को मिली और इसके लिए संघर्ष भी सम्पूर्ण भारतीयों ने किया था परन्तु जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो यह पाते हैं कि आजादी की लड़ाई में योगदान करने वालों में हमेशा पूर्वोत्तर के स्वतन्त्रता सेनानियों का मिलता नहीं था या फिर बहुत कम नाम ही इसमें शामिल हुए।[1]

आज जब हम भारत के स्वाधीन आन्दोलन की बात करते हैं तो यह महसूस होता है कि आजादी को पाने में योगदान देने वाले उन महान सेनानियों को याद करना जरूरी है जिन्हें इतिहास के पन्नों में जगह नहीं दी गई है। स्वतन्त्रता के लिए भारत के संघर्ष में योगदान की बात करें तो हमेशा हम महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, महारानी लक्ष्मीबाई आदि के स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनके न भूलने वाले नेतृत्व को याद करते हैं परन्तु इन स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ–साथ कुछ ऐसे स्वतन्त्रता सेनानी भी थे जो सुदूर पूर्वोत्तर राज्यों से भी अपनी अहम भागीदारी का निर्वहन कर रहे थे।[2]

देश को आजाद कराने के लिए और इन्हीं उत्तर पूर्व भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों के बारे में एवं उनके महत्त्व की ओर पूरे भारत का ध्यान आकर्षित कर उनके शौर्य से परिचित करवाना हमारा मुख्य उद्देश्य है क्योंकि आजादी के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन खड़ा करने में पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासियों के स्वतन्त्रता के आन्दोलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

इतिहास के पन्नों को टटोलें तो सन् 1857 की क्रान्ति को ही स्वतन्त्रता आन्दोलन संग्राम का पहला आन्दोलन माना जाता है लेकिन पूर्वोत्तर के आदिवासी बाहुल्य राज्यों असम, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम, त्रिपुरा, नागालैंड, अरूणांचल, मिजोरम के सेनानियों का इस प्रथम संग्राम के पूर्व से ही सुरक्षा को लेकर आन्दोलन जारी रहता था। इतिहासकारों का मानना है कि पूर्वोत्तर के स्वतन्त्रता सेनानियों की आजादी के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन खड़ा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पूर्वोत्तरके आठों राज्यों से जिसमें असम के स्वतन्त्रता सेनानी मनीराम देवान, हेम बरूआ, दिनेश्वर शर्मा, टंकेश्वर शर्मा, ज्योति प्रसाद अग्रवाल, वीरांगना कनकलता बरूआ, गोपनीनाथ बरदैल आदि मेघालय के उतिरोत सिंह कियांग नंगबा आदि नागालैंड की रानी गाईदिल्यु, नागना शूरवीर जादोनाना आदि मिजोरम से शूरवीर पसल्या, मिजोऊ रानी रौपुईलिआनी आदि। मणिपुर से वीर टिकेन्द्र जीत सिंह, वीर जनरल थोगम पाओना ब्रजवासी जननेता इरावत आदि ने ब्रिटिश शासन से लोहा लेने एवं अंग्रेजों के खिलाफ संगठित सशस्त्र संघर्ष करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इन्हीं पूर्वोत्तर के स्वतन्त्रता सेनानियों के योगदान, महत्त्व और शोध की नई दिशाओं की खोज कर भारतीय परिदृश्य के पटल पर लाना है, जिससे सभी भारतीय उनके योगदान को जान सकें एवं भारत के एकसूत्रता के सन्दर्भ को सभी भारतीय पहचान सके।[3]

भारत के कुछ प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय पूर्वोत्तर से भी ऐसे अनेक वीर योद्धा और वीरांगना हुए, जिन्होंने इस देश के लिए अपना जीवन न्यौछावर किया। कितनों ने सीने में गोलियाँ खाईं और कितने ही वीर फाँसी के तख्ते पर चढ़ गये किन्तु राष्ट्रीय धरातल पर ऐसे वीर और वीरांगनाओं की कोई खास चर्चा नहीं है और न ही लोग इनके त्याग को पहचानते हैं। केवल राज्य की सीमा तक हर इनकी शौर्य गाथायें सीमित रह गयीं। आज इस लेख में कुछ वीरांगनाओं के साहसिक कार्यों को संक्षिप्त रूप में दर्शाया गया है।

मनिराम देवान

ये असम के सबसे महान स्वतन्त्रता सेनानियों में से एक थे। इन्होंने असम का पहला चाय बगान स्थापित किया

था। 1857 के विद्रोह के दौरान उनके खिलाफ साजिश रचने के लिए उन्हें अंग्रेजों ने फाँसी दे दी थी।

शूरवीर पसल्था

ये पहले मिजो स्वतन्त्रता सेनानी थे जिन्होंने 1890 में ब्रिटिश प्राधिकरण के अपवित्र विस्तार का विरोध करते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया था।[4]

यू तिरोत सिंग श्याम

ये 19वीं शताब्दी के खासी लोगों के नेताओं में से एक थे। इन्होंने अपने वंश को सिमीलिह वंश से जोड़ कर खासी लोगों को एकजुट कर दिया था। वह खासी पहाड़ियों का हिस्सा, नांगखलाव का सिमीम (प्रमुख) थे। उन्होंने खासी पहाड़ियों पर नियंत्रण करने के ब्रिटिश प्रयासों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इनकी पुण्यतिथि (17 जुलाई, 1835) को हर साल मेघालय में राजकीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है।

बीर टिकेन्द्र जीत सिंह

ये स्वतन्त्र मणिपुर रियासत के राजकुमार थे। इन्हें वीर टिकेन्द्रजीत और कोइरेंग भी कहते हैं। ये मणिपुर सेना के कमाण्डर थे। इन्होंने 'महल–क्रान्ति' की, जिसके फलस्वरूप 1891 में अंग्रेज–मणिपुरी युद्ध शुरू हुआ। अंग्रेज–मणिपुरी युद्ध के दौरान अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर सार्वजनिक रूप से उन्हें फाँसी दी थी।[5]

भोगेश्वरी फुकननी

भोगेश्वरी फुकननी असम की पहली महिला शहीद हैं। उनका जन्म 1885 को असम के नगाँव जिले में हुआ था। स्वतन्त्रता संग्राम के समय असम में सबसे ज्यादा रक्तपात नगाँव जिले में ही हुआ था। बचपन से ही देशभक्त स्वभाव की भोगेश्वरी ने अपने पति और आठ बच्चों को छोड़कर स्वयं को आन्दोलन में झोंक दिया। भोगेश्वरी के आन्दोलन ने मुक्त विद्रोह का रूप धारण कर लिया था। 42' के 25 अगस्त को उन्होंने अपने दल के साथ स्थानीय डाकघर, तहसील, कार्यायल और रेलवे स्टेशन को ध्वस्त कर दिया। थोड़ी दूरी पर बेजेजीया नामक स्थान पर टंक रोड के ऊपर स्थित पुल को भी उखाड़ दिया। ब्रिटिश सेना के बाधा को भी परवाह किये बिना उन्होंने अपना आन्दोलन जारी रखा।

उसी वर्ष 28 अगस्त के दिन अपने दल का नेतृत्व करते हुए जब वे आगे बढ़ी तो पुलिस की गोली से उनके सहकर्मी कलाई कोच, हेम, बरा शहीद हुए और अन्य छह लोग घायल हो गये। फिर जंगल बलहू नामक स्थान पर पुल को नष्ट करने के लिए वे जुलूस बनाकर आगे बढ़ी। इस बार पुलिस की गोली में फिर हेमराय पातर और गुर्णाथ बरतुलै शहीद हुए, पर भोगेश्वरी ने जो ठान लिया था, वह करके ही दम लिया।

वे एक पत्नी थीं, एक माँ थी। घर संसार की जिम्मेदारी भी उन पर थी। अपने हाथ से कपड़े बुनकर घरवालों को पहनाती थी। पर इसके बीच भी उनके हृदय में देशप्रेम और आजादी की ज्वाला धधक रही थी। हर क्षण वे देश की आजादी के लिए जेल जाने को तैयार थी। एक बार वे जुलूस में निकलीं। गाँव वालों को सचेत करने और पुलिस के आने की खबर देने के लिए उनके सहयोगी तिलक डेका ने रण का घंटा बजाया तो पुलिस ने उन्हें गोली मार दी। फिर भी वे न डरी और आगे बढ़कर अपने ससुराल के गाँव बढ़मपुर के पास पुलिस के हाथ से शांति सेना शिविर पर कब्जा कर लिया। इसके लिए पुलिस के बर्बर अत्याचार का भी उन्होंने सामना किया। इसी से पूरी जनता ने उग्ररूप धारण कर लिया। सब लोग तिरंगा लेकर आगे बढ़ने लगे। भोगेश्वरी की सहेली रत्नमाला से पुलिस ने तिरंगा छीन लिया और वे जमीन पर गिर पड़ी। तिरंगे को पुलिस का कप्तान फिनिश शाहब अपमान कर फेंकने ही वाला था कि भोगेश्वरी गरज उठीं। वे आगे बढ़ी तो पुलिस ने उन्हें रोका। भोगेश्वरी ने तिरंगे के डंडे से ही कप्तासन के मुँह में आघात कर दिया और उसने भोगेश्वरी के माथे पर कई गोलियाँ दाग दी और उनके माथे के छिथड़े उड़ गये और वे शहीद हो गयीं।[6]

कनकलता बऊआ

वर्ष 1942 के आन्दोलन में असमिया रमणी कनकलता का योगदान भी अविस्मरणीय है। तेजपुर के शहपुर में वे जन्मी थी। 42 के आन्दोलन के समय उन्होंने मृत्यु वाहिनी में योदान किया और तब वे केवल सत्रह वर्ष की थी और विवाह के लिए कुछ ही महीने रह गये थे। पूर्व निर्धारित सिद्धान्त के अनुसार दरंग जिले की कांग्रेस कमेटी ने 42 के 20 सितम्बर के दिन जिले के सभी पुलिस चौकियों में तिरंगा फहराने का काम हाथ में लिया। हर थाने की तरफ लोग तिरंगे के साथ जुलूस बनाकर निकले। गहपुर थाने के जुलूस का नेतृत्व पुष्पलता दास के हाथों में था, पर देशभक्त कनकलता ने स्वयं आगे आकर उसका नेतृत्व अपने कंधों पर लिया। मृत्यु वाहिनी के सदस्यों को यह आदेश दिया जा चुका था कि तिरंगे को सीधा रखना है, किसी भी हाल में पीछे नहीं मुड़ना है, बाधाओं को पार कर आगे चलते रहना है और पुलिस की गोली से अगर तिरंगा पकड़ने वाला गिर जाये तो एक के बाद दूसरे को तिरंगे की जिम्मेदारी संभालनी है।

शांतिवाहिनी के चार हजार और अपनी मृत्यु वाहिनी के चार हजार कुल आठ हजार लोगों के जुलूस का नेतृत्व कर कनकलता आगे बढ़ी। पहले शांतिपूर्ण रूप से तिरंगा फहराने के लिए उन्होंने थाने के आफिसर से अनुमति माँगी, पर ऑफिसर ने आँखे लाल कर उन्हें आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश की। कनकलता यह कहते हुए की भैया आप अपना काम कीजिए, और मैं अपना काम करती हूँ, आगे बढ़ी। तभी अधिकारी ने उन्हें कई गोलियों से छलनी कर दी। वे नीचें गिर गयीं और साथी मुकुंद काकती ने तिरंगा संभाला। कुछ ही

क्षण बाद कनकलता का प्राण पखेरू उड़ गया और वे शहीद हो गयीं।[7]

द्वारिकी बऊआ 1921 से ही स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय थी। उनके पति आनंदराम बऊआ भी स्वतन्त्रता सेनानी थे। इसीलिए आंदोलन में भाग लेना उनके लिए भाग और आसान हो गया था। वे बचपन से ही साहसी और देशप्रेमी थी। देश की स्वाधीनता के सपने में वे आतुर रहती थीं। एक लड़की होकर घर से बाहर निकलना आसान न था पर विवाह के बाद जब पति से सहयोग मिला तो खुलकर आन्दोलन में कूद पड़ी।[8]

सन् 1921 में शराब, भाँग आदि के विरोध में असम में प्रचार अभियान चरम पर था। इसी अभियान में द्वारिकीजी ने अपने गोलघाट वासियों को जगाने कास काम किया। लोगों को स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। 1932 में वे गर्भावस्था में थी और तब भी बढ़–चढ़कर आन्दोलन में भाग लेना उन्होंने नहीं छोड़ा था। अपने गाँव की महिलाओं का नेतृत्व कर वे आगे बढ़ रही थी, तभी पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 6 महीने तक सश्रम कारावास हुआ। गर्भ से होने के कारण उनकी सेहत बिगड़ने लगी। फिर भी जेल से आन्दोलन को दिशा निर्देश करती रहीं। उसी बीच जेल के अस्वास्थ्यकर परिवेश के चलते डिसेंट्री हो गयी, पर जेल अधिकारियों को इसकी परवाह न थी। उन्हें अपने साथियों के द्वारा सशर्त मुक्ति के लिए सरकार से आवेदन करने की सलाह दी गयी पर अपने परिवार और कोख की संतान से भी ज्यादा उन्होंने अपने कर्त्तव्य को अधिक महत्त्व दिया। तब उनके पति और बड़ा बेटा भी दूसरी जेल में बंद थे। उसके लिए द्वारिकी जी के मन में कोई दुरूख नहीं था। 1932 के 25 अप्रैल के दिन उन्हें जेल के चिकित्सालय तक ले जाया गया। 26 अप्रैल के दिन गर्भस्राव के चलते द्वारिकीजी ने अंतिम सांस ली और देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी।[9]

निष्कर्ष

अतः हम इस प्रकार कह सकते है स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। ऐसे वीर और वीरांगनाओं ने अपने व्यक्तिगत सुख–दुःख को किनारा करके समाज के बारे में सोचा, जीवन भी दुःख सहा, पर कभी हार नहीं मानी। इन लोगों के उदात्त सोच और महानता का ही परिणाम है कि आज हम स्वाधीन भारत में जी पा रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. संस्कृति संगम उत्तर पूर्वांचल– विजय राघव रेड्डी, कलिंगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1994
2. पूर्वोत्तर के स्वतन्त्रता सेनानी– जगमल सिंह, प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण मंत्रालय, 1989
3. आधुनिक भारत के निर्माता तिरोतसिंह– डॉ० उ हैमलेट बारे ह. 1989
4. जनरल्स एस गवर्नर्स– डी पैर्लेस पॉलीटिकल सिस्टम ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया, 3 जुलाई, 2009
5. प्लासी से विभाजन (1757–1947)– शेखर बधोपध्याय, अगस्त 2008
6. पूर्वांचल की ओर– मधुकर दिघे, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
7. मनोरम भूमि अरूणांचल– माता प्रसाद प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, 1993
8. महासंग्राम गाथा (भाग–1)– अरूण कुमार, साहित्य भण्डार, 50 चाहचंद, इलाहाबाद, 2008
9. महासंग्राम गाथा (भाग–2)– अरूण कुमार, साहित्य भण्डार, 50 चाहचंद, इलाहाबाद, 2008